

बाबा ने आज बार-बार कहा, तुम्हें यहाँ हर कर्म करते बुद्धियोग एक बाप से रखना है, इसमें टाइम वेस्ट नहीं करना है.

बाबा ने आज सारी मुरली में हमें हर कर्म करते कैसे बाप की याद में रहना है वह सिखाया. बाबा ने जो हमें सिखाया वह एक बार रिपिट करेंगे तो उससे हमारी याद पक्की हो जायेगी.

मुरली कैसे सुननी है? -- बाबा हम बच्चों को रोज-रोज याद दिलाते हैं - "देही-अभिमानि बने क्योंकि बुद्धि इधर-उधर जाती है". भक्ति में जब हम कथाएं सुनते हैं तो बुद्धि बाहर भटकती है क्योंकि वहाँ देही-अभिमानि नहीं रहते. यहाँ तो निराकार बाप आत्माओं को समझाते हैं, तुम सब स्टूडेंट देही-अभिमानि होकर बैठो. बाबा जानते हैं हम बच्चे देही-अभिमानि होते हैं तभी बुद्धियोग बाप के साथ सहज रह सकता है, नहीं तो बुद्धि यहाँ-वहाँ भटकती है. बाबा ने कहा, आत्मा को सतोप्रधान बनने की बाप ने फर्स्टक्लास रीयल युक्ति बताई है. यहाँ तुम बच्चे शान्ति में तब बैठते हो जबकि बाप के साथ योग है. अगर बुद्धियोग यहाँ-वहाँ गया तो शान्त में नहीं है, गोया अशान्त है. जितना समय यहाँ-वहाँ बुद्धियोग गया, वह निष्फल हुआ क्योंकि पाप तो कटते नहीं. बाप के कहा है मेरी याद में बैठो, तो जब तक याद की तार जुटी हुई है, उतना समय सफलता है. जरा भी बुद्धि इधर-उधर गई तो वह टाइम वेस्ट हुआ, निष्फल हुआ. इससे तुम जल्दी सतोप्रधान नहीं बनेंगे. आज से हम, हर रोज सेंटर पर या मधुबन में मुरली सुने तो सबसे पहले याद करो - हम आत्मा स्टूडेंट बैठे हैं और हमें स्वयं परमपिता-परमात्मा टीचर बन पड़ा रहे है.

अगर हमारा बुद्धियोग बाप से लगाकर हम मुरली सुनते हैं तो बाबा हमें जो भी नयी-नयी पॉइन्ट्स मुरली में सुनाते हैं, वह हम सहज धारण कर सकते हैं, हमें देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस होती जाती है, और बाबा के महावाक्यों को सुनकर हमें अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है. आत्मा गुणों और शक्तिओं से भरपूर होती है और आत्मा के पाप भी दग्ध होते जाते हैं और आत्मा जल्दी ही सतोप्रधान बन जायेगी.

सारे दिन के लिए -- बाबा ने यह भी समझाया है कि हाथों से काम करते रहो, दिल से बाप को याद करो. शरीर को तंदुरुस्त रखने के लिए घूमना फिरना, यह भी भूल करो. परन्तु बुद्धि में बाप की याद रहे.

चलते-फिरते -- अगर साथ में कोई हो तो झरमुई-झगमुई नहीं करनी है. बाबा समझाते हैं ऐसी अवस्था में चक्कर लगाओ, जैसे पादरी लोग जाते हैं एकदम शान्त में. तुम लोग ज्ञान की बात तो सारा दिन नहीं करेंगे फिर जबान को शान्त में लाकर शिवबाबा की याद में रेस करनी चाहिए.

खाने के समय -- जैसे खाने के समय बाबा कहते हैं - याद में बैठकर खाओ. अपना चार्ट देखो - खाते समय हमें बाबा की याद रहती है?

अन्य काम करते - जैसे की झाड़ू लगाओ, खाना बनाओ तो भी शिवबाबा की याद में बनाओ तो ताकत आयेगी. यह भी युक्ति चाहिए, इससे तुम्हारा भी कल्याण होगा फिर तुम याद में बैठेंगे तो ओरों को भी कशिश होगी.

जितना हम जास्ती याद में रहेंगे उतना सन्नाटा अच्छा हो जायेगा. याद की यात्रा बच्चों के लिए बहुत कल्याणकारी है. ॐ शांति.